© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 11 Issue: 04 | October - December 2020
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in

नारी शक्ति

Ruby, Govt teacher, Loni,Ghaziabad

स्त्री समाज की आधारशिला है माता और पत्नी के रूप में वह है जिन कर्तव्य एवं उत्तरदायित्वो का निर्वाह करती है उन्हीं कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वो पर किसी समाज की उन्नति या अवनति आधारित होती है! स्त्रियों की सामाजिक स्थिति में पूरा समाज प्रभावित होता है! ऐसा देखा गया है कि स्त्रियों की उन्नति एंव अवनति का इतिहास, संपूर्ण समाज की उन्नति या अवनति का इतिहास कहलाता है। भारतीय इतिहास में विभिन्न कालों में महिलाओं के विकास, उसकी उन्नति, अवनति उसके संघर्षलगने वाले प्रतिबंधों की एक लंबी कहानी है। किसी भी देश या समाज के विकास मैं आपको महिलाओं का और बच्चों की स्थिति ही स्पष्ट करती है। क्योंकि जहां बच्चा देश का भविष्य है वहां स्त्री उसकी पहली शिक्षिका, पोषिका दिग्दर्शिका है लेकिन वर्तमान मे तमाम प्रयासों के बावजूद देश में महिलाओं और बच्चों की स्थिति बेहद चिंताजनक है।
वर्तमान समय में संयुक्त राष्ट्र संघ या यूनिसेफ जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठन जो आज भी अशिक्षा, निर्धनता और गरीबी के कारण कुपोषित जीवन जी रहे हैं बच्चों के स्वास्थ्य और स्त्री शिक्षा पर अपनी चिंता व्यक्त कर चुके हैं। हम इस मामले में केवल अफगानिस्तान और भूटान से ही बेहतर है। वर्ष 2011 की साक्षरता दर के अनुसार महिला साक्षरता की दर 65.46 प्रतिशत है फिर भी हम वैश्विक अनुपात 79.07 प्रतिशत से पीछे हैं। वही स्कूल छोड़ने की दर 83.5 प्रतिशत, बेहद उच्च है। यह भारतीय समाज के लिए बेहद चिंताजनक है।

क्योंकि हम उस समाज में निवास कर रहे हैं जहां बच्चों के लालन-पालन की जिम्मेवारी बहुत हद तक मां की होती है ऐसे में हम अपनी आने वाली पीढ़ी को क्या देंगे जब मां ही निरक्षर होगी। यही वजह है कि हमने अपनी नई शिक्षा नीति का एक उद्देश्य निर्धारित किया है कि "शिक्षा का उपयोग महिलाओं के स्तर को सुधारने के लिए निर्धारित किया जाएगा।"

राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली महिलाओं के सशक्तिकरण में सकारात्मक हस्तक्षेपकर्ता की भूमिका अदा करेगी। फिर भी हमें अभी भी महिला शिक्षा के क्षेत्र में बहुत से पड़ावो को पार करना शेष है उपयुक्त कथन यह बताने के लिए काफी है कि महिला सशक्तिकरण एवं ज्ञानवान समाज के उदय में महिला शिक्षा का कितना महत्वपूर्ण योगदान है जहां हम आधुनिक समाज एवं आजादी के इतने वर्ष बीत जाने के बाद भी नारी शिक्षा में शत-प्रतिशत तो पूरे पुरुषों के समान स्तर पर भी नहीं पहुंच पाए हैं। हमारे इतिहास में नारी शिक्षा की गौरवमई परंपरा विद्यमान थी। निश्चय ही ऐसे समाज में रहने वाली हर जाति, वर्ण, वर्ग और नारी को भी हर क्षेत्र में स्वतंत्रता मिलती थी प्राचीन समाज में हमें पर्याप्त सामाजिक गतिशीलता देखने को मिलती है। यही वजह है कि ऐतिहासिक नारी चरित्र आज भी नारियों के लिए आदर्श बनीं हुई है। भारतीय धर्म को छोड़कर विश्व का भी धर्म स्त्री को इतनी अधिक प्रधानता का नहीं देता। इसका सुंदर उदाहरण है हिंदू

विवाह पद्धति। भारतीय हिंदू संस्कृति में विवाह को एक धार्मिक कृत्य माना जाता है विवाह में कन्या पक्ष की ओर से कन्यादान किया जाता है जो दर्शाता है कि वर पाक्षक याचक है और लड़की पक्ष दाता है और दाता हमेशा पाक्षक से बड़ा होता है। अर्धनारीश्वर की कल्पना भी इसी सिद्धांत को पुष्ट करती है की स्त्री और पुरुष बराबर है। उपरोक्त उदाहरणों का एकमात्र उद्देश्य यही दर्शाना है कि स्त्री का इतिहास गौरवमई रहा है।

स्त्री और पुरुष के मध्य तर्क एवं संवाद प्रगतिशील समाज का सूचक माना जाता है जो आज भी कई देशों अपितु विकसित देशों में भी यशेष्ट दिखाई नहीं देता। प्राचीन कालीन स्त्री की विदुषिता होने का उदाहरण हमें उनके विद्ता भरे शास्त्रार्थ में दिखाई देता है। इसी प्रकार एक उदाहरण वृहदारवयक उपनिषद में मिलता है । विदेह के राजा जनक के दरबार में याज्ञवल्क्य ऋषि से जहां ऋषिगण शास्त्रार्थ में पराजित हो रहे थे, वही सबसे तीक्ष्ण प्रश्न वायक्रवी गार्गी (ऋषि वयकू की पुत्री होने के कारण) की तरफ से हुए। याज्ञवल्क्य को भी कहना पड़ा है "यह तो अवि प्रसन्न है " गार्गी । यह उतर की सीमा है, अब इसके आगे प्रश्न नहीं हो सकता। अब तू प्रश्न ना कर, नहीं तो मेरा मस्तक गिर जाएगा। कथानक गार्गी की विद्वता दर्शाता है। ऋषि याज्ञवल्क्य की पत्नी मैत्रीयी स्वयं विदुषी थी। मैत्रीयी का मानव जीवन की दशा एक भौतिक जीवन की सीमा पर बेहद सुंदर एवं प्रकृति के प्रश्नों को लेकर जो दार्शनिक संवाद है, वह न केवल प्राचीन भारत अपितु आधुनिक विश्व के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण है

नोबेल विजेता एवं प्रसिद्ध अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन का भी मानना है, कि याज्ञवल्क्य और मैत्रीयी संवाद ने उन्हें विकास को देखने का एक भी अलग नजरिया दिया की विकास एक विस्तृत अवधारणा है जो केवल जीडीपी एवं जीएनपी जैसे मानको से नहीं मापा जा सकता है। उपरोक्त उदाहरणों का एकमात्र उद्देश्य यह दर्शाना तथा कि समाज में नारी का महत्वपूर्ण स्थान रहा है और यह स्थान उसने अपने आप को सिद्ध करके बनाया है। वर्तमान समाज में भी कुछ जनजातियों को देखें तो इनमें आज भी महिलाओं की स्थिति पुरुषों की अपेक्षा काफी अच्छी है जैसे–नारो, खासी, लक्ष्यदीप वासी, नायक आदि। प्वासी जनजाति में सबसे बुजुर्ग महिला ही परिवार के मुखिया होती है। हम हजारों वर्षों से नारी के महत्व व उत्थान की बात करते आ रहे हैं, नारी को अपनी क्षमताएं सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वह पुरुषों से किसी भी क्षेत्र में कम नहीं है। आवश्यकता बस इतनी है कि हम नारी के प्रति अवधारणाओं में परिवर्तन कर सकें। नारी को एक मानवीय रूप में स्थापित करना होगा। नारी समाज के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, उसने एक बहन, बेटी, बहू, पत्नी के रूप में समाज में प्रेम, स्नेह, सौहार्द त्याग से एक स्वर्गीक वातावरण तैयार किया है। जब भी महिला सशक्तिकरण की बात की जाए तो हमको जानना और मानना होगा कि इसका एकमात्र माध्यम शिक्षा है। शिक्षा

केवल जीविकापार्जन का साधन नहीं है अपितु एक खुशहाल जीवन जीने की कला सिखाती है। नारी शिक्षा.... नारी उत्थान।

सन्दर्भ सूचि :

- नारी शक्ति , 10 October 2019 by Jagriti Asthana
- महिला सशक्तिकरण , July 16, 2019 विकास सिंह
- http://hindiscreen.com/nari-shakti-in-hindi-essay/
- https://hindiamrit.com/bhartiy-nari-par-nibandh-essay-on-indian-woman-in-hindi/